Indian e-Journal on Teacher Education (IEJTE)
Bi-Monthly e-Journal (Peer Reviewed)
ISSN
2320 –7566

उच्च शिक्षा स्तर पर विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक चुनौतियां: समावेशी शिक्षा के विशेष संदर्भ में

OM KUMARI

Research scholar Department of Education,
University of Lucknow,
Uttar Pradesh

==

परिचय:

शिक्षा में समावेशी शिक्षा एक ऐसा शैक्षिक दृष्टिकोण है जो सभी विद्यार्थियों, चाहे उनकी शारीरिक, मानसिक, या संज्ञानात्मक क्षमताएं कैसी भी हों, को समान अवसर और समर्थन प्रदान करता है। इसका मुख्य उद्देश्य विविधता को अपनाना और सभी छात्रों को एक ही शिक्षा प्रणाली में शामिल करना है, ताकि वे अपनी पूर्ण क्षमताओं को विकसित कर सकें। समावेशी शिक्षा का मतलब है कि शिक्षा संस्थान प्रत्येक छात्र की विशिष्ट आवश्यकताओं को समझें और उन्हें समुचित संसाधन, समर्थन, और अनुकूलन प्रदान करें। इस दृष्टिकोण में सहायक तकनीकों का उपयोग, विशेष पाठ्यक्रम अनुकूलन, और प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति शामिल है। यह न केवल विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि समग्र शिक्षा प्रणाली को भी सशक्त बनाता है। समावेशी शिक्षा समाज में समानता और समान अवसर की भावना को बढ़ावा देती है, जिससे सभी विद्यार्थी अपनी पूरी क्षमताओं के साथ शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

उच्च शिक्षा में विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों को समावेशी शिक्षा के संदर्भ में कई शैक्षणिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इन विद्यार्थियों को न केवल शारीरिक और मानसिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, बल्कि उन्हें ऐसी शैक्षणिक संरचना की भी कमी महसूस होती है जो उनकी विशेष आवश्यकताओं को पूरा कर सके। समावेशी शिक्षा का उद्देश्य सभी छात्रों को समान और सुलभ शिक्षा प्रदान करना है, लेकिन उच्च शिक्षा संस्थानों में विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के लिए यह अभी भी एक दूरस्थ लक्ष्य है। शिक्षण सामग्री, सहायक तकनीक, और शिक्षकों का प्रशिक्षण विशेष आवश्यकता वाले छात्रों की शैक्षणिक प्रगति के लिए महत्वपूर्ण तत्व हैं। इन छात्रों को सहायक उपकरण, अनुकूलित पाठ्यक्रम, और समर्पित शैक्षणिक संसाधनों की आवश्यकता होती है, जो उनकी शैक्षिक प्रक्रिया को सुलभ और प्रभावी बना सकें। इसके अतिरिक्त, परीक्षा प्रक्रियाओं और मूल्यांकन पद्धतियों में लचीलापन भी आवश्यक है ताकि इन छात्रों की शैक्षणिक क्षमता का सही आकलन किया जा सके।

विशेष आवश्यकता वाले छात्रों को शैक्षणिक, सामाजिक और भावनात्मक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जो उनके शैक्षिक अनुभव को प्रभावित करती हैं। इन छात्रों को शैक्षणिक सफलता की दिशा में सहायक तकनीकों की कमी, प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव, और सहपाठियों के साथ सामाजिक एकीकरण की कठिनाई

का सामना करना पड़ता है। भावनात्मक रूप से, काउंसलिंग और मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं की अनुपलब्धता इनकी शैक्षिक यात्रा को और जटिल बना देती है। इन चुनौतियों को देखते हुए, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 ने समावेशी शिक्षा की दिशा में कई सुधारात्मक कदम उठाने का प्रस्ताव किया है। इस नीति के तहत उच्च शिक्षा में विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के लिए सहायक तकनीक, पाठ्यक्रम में लचीलापन, और शिक्षकों के विशेष प्रशिक्षण को बढ़ावा देने की सिफारिश की गई है। NEP 2020 का लक्ष्य इन बाधाओं को दूर करके सभी छात्रों के लिए समान और समावेशी शिक्षा सुनिश्चित करना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 भारत की शिक्षा प्रणाली में सुधार लाने के उद्देश्य से तैयार की गई एक व्यापक नीति है। इसका मुख्य उद्देश्य एक समावेशी, समान, और बहु-विषयक शिक्षा प्रणाली स्थापित करना है, जो सभी वर्गों के छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करे। NEP 2020 में स्कूली शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक कई महत्वपूर्ण सुधार प्रस्तावित किए गए हैं। नीति में 5+3+3+4 की नई शैक्षिक संरचना, मातृभाषा में शिक्षा को बढ़ावा, और मूल्यांकन प्रक्रियाओं में लचीलापन शामिल है। उच्च शिक्षा में, इसका उद्देश्य बहु-विषयक संस्थानों को बढ़ावा देना, पाठ्यक्रमों में लचीलापन लाना, और शोध एवं नवाचार को प्रोत्साहित करना है। NEP 2020 विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के लिए समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने पर जोर देती है, ताकि शिक्षा सभी के लिए सुलभ हो सके। यह नीति भारत को 21वीं सदी की शिक्षा आवश्यकताओं के साथ जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

उच्च शिक्षा में समावेशी शिक्षा का उद्देश्य सभी विद्यार्थियों, विशेष रूप से विशेष आवश्यकता वाले छात्रों, को समान शैक्षणिक अवसर प्रदान करना है। यह शिक्षा का एक ऐसा ढांचा है जो विविध छात्रों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखता है और उन्हें मुख्यधारा की शिक्षा प्रणाली में सम्मिलित करता है। हालांकि, विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा स्तर पर कई शैक्षणिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जो उनके सीखने की प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न करती हैं। ये चुनौतियाँ शैक्षणिक संसाधनों की कमी, शिक्षण विधियों में आवश्यक अनुकूलन की कमी, और सहायक तकनीकों की अनुपलब्धता से संबंधित होती हैं (Sharma &Deppeler, 2005)।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 समावेशी शिक्षा के सिद्धांतों पर बल देती है और उच्च शिक्षा में विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के लिए एक सहायक और सुलभ वातावरण बनाने का प्रयास करती है। इसमें विशेष प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों की नियुक्ति, पाठ्यक्रम में लचीलापन और सहायक तकनीकों के उपयोग को प्राथमिकता दी गई है (MHRD, 2020)। इसके बावजूद, इन नीतियों का प्रभावी कार्यान्वयन एक बड़ी चुनौती बना हुआ है, खासकर ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में, जहाँ इन सेवाओं की उपलब्धता अत्यंत सीमित है (Singh & Sarkar, 2015)

उच्च शिक्षा में विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक चुनौतियाँ समावेशी शिक्षा की दिशा में एक महत्वपूर्ण बाधा हैं। समावेशी शिक्षा का उद्देश्य हर छात्र, चाहे उसकी शारीरिक, मानसिक या संज्ञानात्मक क्षमता कोई भी हो, को समान अवसर और समर्थन प्रदान करना है ताकि वह शिक्षा के विभिन्न आयामों से लाभान्वित हो सके (UNESCO, 2017)। हालांकि, विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के लिए उच्च शिक्षा में भाग लेना चुनौतीपूर्ण हो जाता है, क्योंकि उन्हें शैक्षणिक संसाधनों की कमी, शिक्षकों की अपर्याप्त समझ, और सहायक उपकरणों की अनुपलब्धता जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है (Mittler, 2000)।

NEP 2020 इस दिशा में एक महत्वपूर्ण सुधारात्मक कदम है, जो विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के लिए एक समावेशी और सहायक शैक्षणिक वातावरण बनाने का प्रयास करता है। इसमें शैक्षिक संस्थानों के ढांचे में बदलाव और पाठ्यक्रम में लचीलापन लाने का सुझाव दिया गया है ताकि विभिन्न क्षमताओं वाले छात्रों की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके (MHRD, 2020)। NEP 2020 विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के लिए तकनीकी सहायता, प्रशिक्षित शिक्षकों, और एक समावेशी शिक्षण सामग्री का विकास करने पर जोर देती है (Kumar, 2021)। इसके बावजूद, कई शिक्षण संस्थानों में आवश्यक अवसंरचना और नीतियों का अभाव है, जो इन नीतियों के क्रियान्वयन में बाधा डालता है (Reddy, 2016)

संक्रियात्मक परिभाषा

समावेशी शिक्षा - सभी प्रकार के वैयक्तिक शैक्षणिक विभिन्नताओं वाले विद्यार्थियों की शिक्षा एक साथ एक , एक ही छत के नीचे दी जाती है ,ही शिक्षक के द्वारा|

उच्च शिक्षा से तात्पर्य- उच्च शिक्षा से तात्पर्य विशेषतः स्नातक परास्नातक और स्नातकोत्तर से है|

विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी - विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों से तात्पर्य उन विद्यार्थियों से है जिनकी कुछ विशेष आवश्यकता है होती हैं, विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के अंतर्गत श्रवण बाधित, दृष्टिबाधित अर्थ और चलन क्रिया संबंधी इत्यादि विशेष आवश्यकता वाले छात्रों को सम्मिलित किया गया है |

कार्यप्रणाली- शोध के लिए उपयोग की जाने वाली पद्धति द्वतीयक पद्धति, सुझावों और निष्कर्षों पर आधारित है। उच्च शिक्षा स्तर पर विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक चुनौतियां समावेशी शिक्षा के : शिक्षा परिणामों का पूर्ण-स्तरीय मूल्यांकन हुआ है। उच्च शिक्षा स्तर पर समावेशी शिक्षा के संदर्भ में विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों की चुनौतियों का अध्ययन सीमित समय अवधि में किया गया है तथा परिणाम का पूर्ण स्तरीय मूल्यांकन हुआ है|

उच्च शिक्षा स्तर पर विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक चुनौतियां; समावेशी शिक्षा के क्षेत्र में, जहाँ हर छात्र अपने आप में अद्वितीय है, शिक्षक खुद को एक महान मिशन के सबसे आगे पाते हैं। हालाँकि, यह यात्रा चुनौतियों से रहित नहीं है। अर्थात उच्च शिक्षा स्तर पर समावेशी शिक्षा में विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों को बहुत सी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है| जिसमें से कुछ निम्नलिखित है|

1-पहुंच में चुनौती

2-समता में चुनौती

3-गुणवत्ता में चुनौती

4-वहनीयता में चुनौती

5- आवश्यक संसाधनों का आभाव- समावेशी शिक्षा की दुनिया में, उच्च शिक्षा में विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों को अक्सर एक कठिन चुनौती का सामना करना पड़ता है जिसमें आवश्यक संसाधनों की कमी अक्सर देखी जाती है|। यह ऐसा है जैसे आप अपना पसंदीदा भोजन पकाने की कोशिश कर रहे हों लेकिन उसमें मुख्य सामग्री न हो। संसाधनों के आभाव में विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी को अपने शिक्षण और समस्या समाधान कौशल को पूर्ण रूप से विकसित करने में समस्या होती है। वर्तमान समय की यह एक बड़ी चुनौती है|

6-प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव- समावेशी शिक्षा के संदर्भ में उच्च शिक्षा में वर्तमान समय में प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव एक बड़ी चुनौती है जिससे विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के शिक्षक प्रशिक्षण में बहुत बाधा उत्पन्न होती है और वह सही प्रकार से शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाते हैं

7-परिवर्तन का प्रतिरोध-उच्च शिक्षा में समावेशी शिक्षा को लागू करने में अक्सर बहुत ज़्यादा प्रतिरोध का सामना करना पड़ता है, अच्छा संचार एक पुल की तरह है जो विभिन्न विचारों को जोड़ता है। शिक्षा के सभी हितधारको को समावेशन के बारे में बोलने, संदेह दूर करने और समझ को बढ़ावा देने में कुशल बनना चाहिए। वे समावेशन के कई लाभों को बढ़ावा देने में अग्रणी भूमिका निभाते हैं। यह एक मिशन की तरह है जहाँ शब्दों की शक्ति सबसे कठिन बाधाओं को भी तोड़ सकती है, जिससे सभी के लिए एक उज्जवल, अधिक समावेशी भविष्य का मार्ग प्रशस्त हो सकता है।

8-समावेशी शिक्षा में सर्वोत्तम अभ्यास-शिक्षा के निरंतर विकसित होते परिदृश्य में, सर्वोत्तम अभ्यास और दृष्टिकोण दिए हैं जो समावेशी शिक्षा के लिए बेहतर शिक्षण वातावरण बनाने के लिए विश्वविद्यालय विद्यालयों और महा विद्यालयों को सशक्त बनाते हैं|

9-सहयोगात्मक शिक्षण का अपेक्षाकृत अभाव - सामान्य शिक्षा और विशेष शिक्षा शिक्षकों के बीच सहयोग समावेशी शिक्षा की आधारशिला है। यह दृष्टिकोण विशेषज्ञता और संसाधनों को साझा करने की अनुमति देता है, जिससे अंततः सभी छात्रों को लाभ होता है।

10- व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम (IEP) विकसित करने के उचित कुशलता का अभाव -विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों के लिए IEP विकसित करना और नियमित रूप से उनकी समीक्षा करना आवश्यक है। ये प्रोग्राम प्रत्येक विद्यार्थी की आवश्यकताओं के अनुरूप विशिष्ट लक्ष्य, समायोजन और सहायता सेवाओं की रूपरेखा तैयार करती हैं। व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम (IEP) विकसित करने के उचित कुशलता का अभाव भी उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों को चुनौती का सामना करना पड़ता है|

11-सहपाठियों में सहयोग और जागरूकता का आभाव - साथियों या सहपाठियों के सहयोग और साथियों के शिक्षण को प्रोत्साहित करने से कक्षा में अधिक समावेशी माहौल बनाया जा सकता है। छात्र एक-दूसरे से सीखते हैं और एक-दूसरे का समर्थन करते हैं, जिससे समुदाय और सहानुभूति की भावना को बढ़ावा मिलता| लेकिन अभी भी उच्च शिक्षा में एक चुनौती है जिसका सामना विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों को करना पड़ता है|

निष्कर्ष तथा सुझाव

प्रस्तुत प्रकरण पर गहन गहन अध्ययन के पश्चात यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ की विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों को अनेक प्रकार की शैक्षणिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जिसमें शैक्षणिक, सामाजिक, और भावनात्मक और संज्ञानात्मक चुनौतियां शामिल है जिसके कारण विद्यार्थी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से तथा अपने समग्र विकास से वंचित हो जाता है तथा शैक्षिक कुशलताओं को या उपलब्धियां को अपनी योग्यता अनुसार नहीं प्राप्त कर पाते हैं उच्च शिक्षा में जो सबसे बड़ी चुनौती है वह शैक्षणिक स्थान तक पहुंच की हैं यह अत्यंत गंभीर चुनौती है| इस चुनौती के चलते कई विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी शैक्षिक संस्थानों तक नहीं पहुंच पाते इसके अलावा अन्य भी अत्यंत गभीर चुनौतियाँ है जिनको समाप्त करना अति आवश्यक है जिससे चुनौती ग्रस्त विद्यार्थी या विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी अपनी योग्यता अनुसार अधिक से अधिक शैक्षणिक उपलब्धि को आसानी से प्राप्त कर सकें इसके लिए इसके लिए अर्थात इन चुनौतियों को दूर करने के लिए उच्च शिक्षा के सभी हितधारको एवं सरकार को मिलकर प्रयास करना होगा जिससे इन चुनौतियों को कम किया जा सके अथवा समाप्त किया जा सके|

संदर्भ:

Sharma, U., &Deppeler, J. (2005). Integrated Education in India. *International Journal of Special Education*.

MHRD (2020). National Education Policy 2020. Ministry of Human Resource Development, Government of India.

Singh, R., & Sarkar, S. (2015). Inclusive Education in India: Challenges and Prospects. *Journal of Educational Research*.

UNESCO (2017). A guide for ensuring inclusion and equity in education. United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization.

Mittler, P. (2000). Working towards inclusive education: Social contexts. *David Fulton Publishers*.

MHRD (2020). National Education Policy 2020. Ministry of Human Resource Development, Government of India.

Kumar, R. (2021). The Role of Assistive Technology in Inclusive Education. *Indian Journal of Special Education*.

Reddy, G. (2016). Challenges of inclusive education in Indian higher education institutions. *Journal of Education and Practice*.

मौर्या, पी०. एवं बाजपेयी, ए०. (2019). शिक्षकों का मानसिक स्वास्थ्य एवं कुसमायोजन की स्थिति एक गम्भीर समस्या. Shiksha Shodh Manthan, 5 (1), 63-68.

अलूर, एम और हेगार्टी, एस (2005) शिक्षा और विशेष आवश्यकता वाले बच्चे पृथक्करण से समावेशन-तक। सेज प्रकाशन, कैलिफोर्निया।